JUNIOR DIAMOND

www.juniordiamond.com

मिनवा और डम्पुआ के कारनामे

Author: V Raghunathan

Illustrator: Shilo Shiv Suleman

भूमिका

'मिनवा और डम्पुआ के कारनामे – हिंन्दी बाल कविताएँ चार से सात साल के बच्चों के लिए दो भागों में लिखी गई हैं। यह दूसरा भाग है। हर भाग में 24 कविताएँ हैं। यह कविताएँ, सन् 2006 व 2007 में मेरी सुबह की सैर के दौरान लिखी गईं, जो दो बच्चों से प्रेरित हैं (जो कि अब बड़े हो चुके हैं)।

इन कविताओं को सिर्फ इसलिए नहीं लिखा गया कि नन्हे मुन्नों को हिंदी कविताओं का नया खजाना मिल सके। इन्हें इसलिए भी लिखा गया कि हर इंसान में छिपे बच्चे को बाहर निकाला जाए। बच्चों के माता–पिता भी इन्हें पढ़ कर, फिर से बचपन में पहुँच जाएँ। मुझे पूरा विश्वास है कि यह संग्रह इस उद्देश्य को पूरा कर पाएगा। यदि कोई दक्षिण भारतीय हिंदी की बाल कविताएँ लिख रहा है, तो इससे राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा मिलेगा– यह भी किसी बोनस से कम नहीं।

मेरी सबसे अच्छी मित्र व पत्नी मीना, सुबह की सैर के वक्त मेरे साथ होती थी, इसलिए सबसे पहले उसी ने इन्हें सुना। उसने कई कविताओं के लिए नए विचार व धुन सुझाई। मैं उसका दिल से आभार प्रकट करता हूँ। मैं शैलो को भी धन्यवाद देना चाहूँगा, जिसने अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति से मिनवा व डम्पुआ के चित्र बनाए!

लेकिन इन सबसे ज्यादा...., मेरी होनहार एक्जीक्यूटिव असिस्टेंट सुषमा। उसने एक बार मेरी फाइल में कुछ कतरनें देखीं और उन्हें प्रकाशित करने का भार संभाल लिया। कविताओं को हिंदी में टाइप करने व योग्य प्रकाशक तक पहुँचाने का सारा श्रेय उसी को जाता है। उसे केवल धन्यवाद देना काफी नहीं है। मैं इस प्रकाशन के लिए उसका ऋणी हूँ।

वी. रघुनाथन
v.raghunathan@gmail.com

अनुक्रमणिका

मिनवा के मूड	1
निडर डम्पुआ	2
राकेट पे मिनवा	3
डम्पुआ का सपना	4
मिनवा का पिल्ला	5
रूठा डम्पुआ	6
डर गई मिनवा	7
कोलकाता में डम्पुआ	8
खेत में मिनवा	9
खेलता डम्पुआ	10
कैलेण्डर में मिनवा	11
डम्पुआ न पीये पैप्सी	12
छोटी मिनवा	13
डम्पुआ के मित्र	14
मिनवा और शहतूत	15
डम्पुआ सीखे गिनती	16
मिनवा खाये अचार	17
डम्पुआ का होमवर्क	18
मिनवा का सपना	19
डम्पुआ का ब्लंडर	20
मिनवा के दांत	21
डम्पुआ और मकड़ी	22
तितली पर मिनवा	23
डम्पुआ न पहने जूते	24

मिनवा के मूड

छोटी मिनवा, मोटी मिनवा।
हंसती मिनवा, रोती मिनवा।
खरी मिनवा, खोटी मिनवा।
जागती मिनवा, सोती मिनवा!

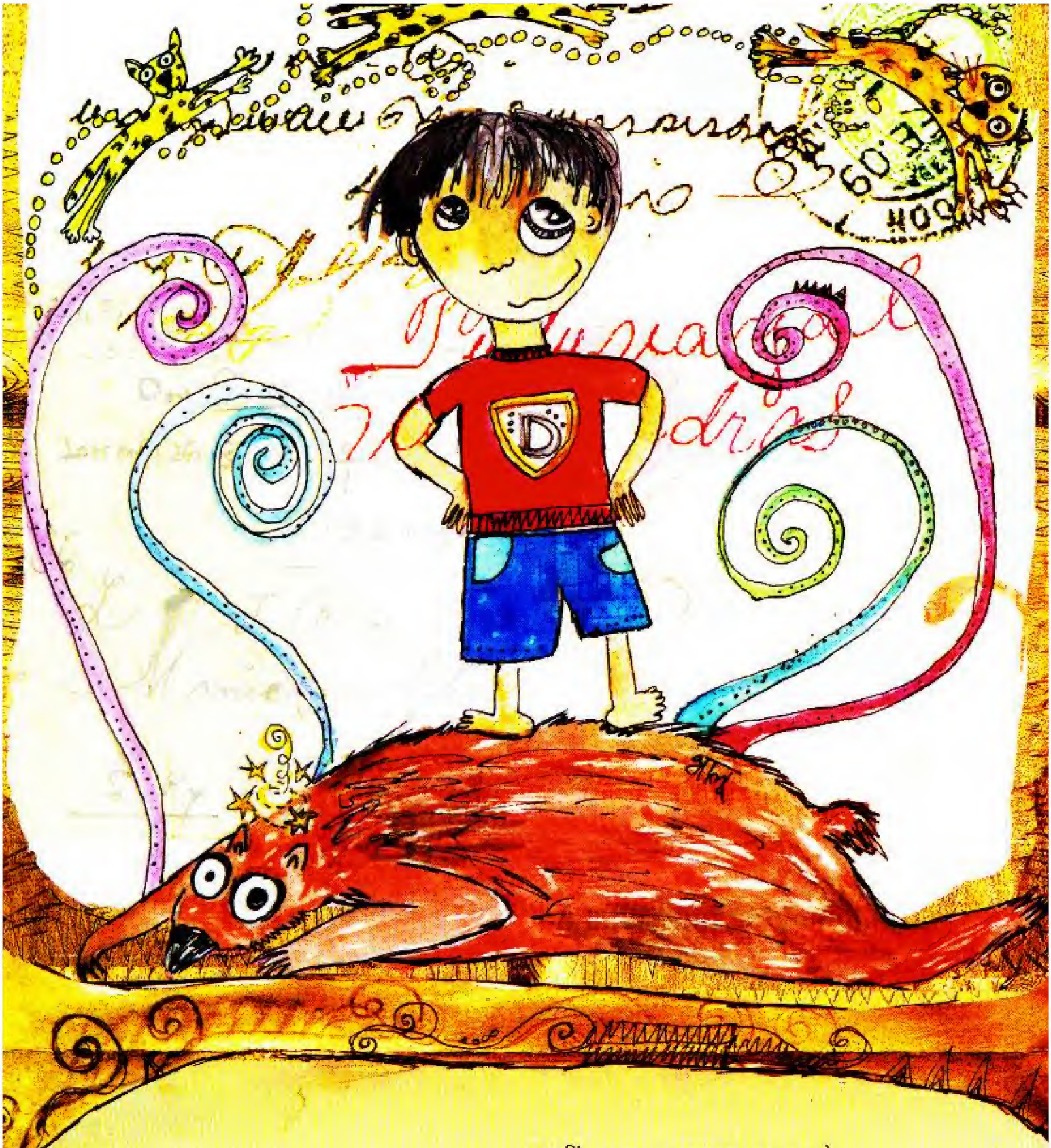

निडर डम्पुआ

नहीं डरता डम्पुआ भालू से,
न चीते के वार से!
पर ज़रूर डरता है डम्पुआ,
स्कूल बैग के भार से!

राकेट पे मिनवा

मिनवा बैठी राकेट में,
लिये चॉकलेट पाकिट में।
राकेट पहुँचा चाँद पर,
अंतरिक्ष को फाँद कर।

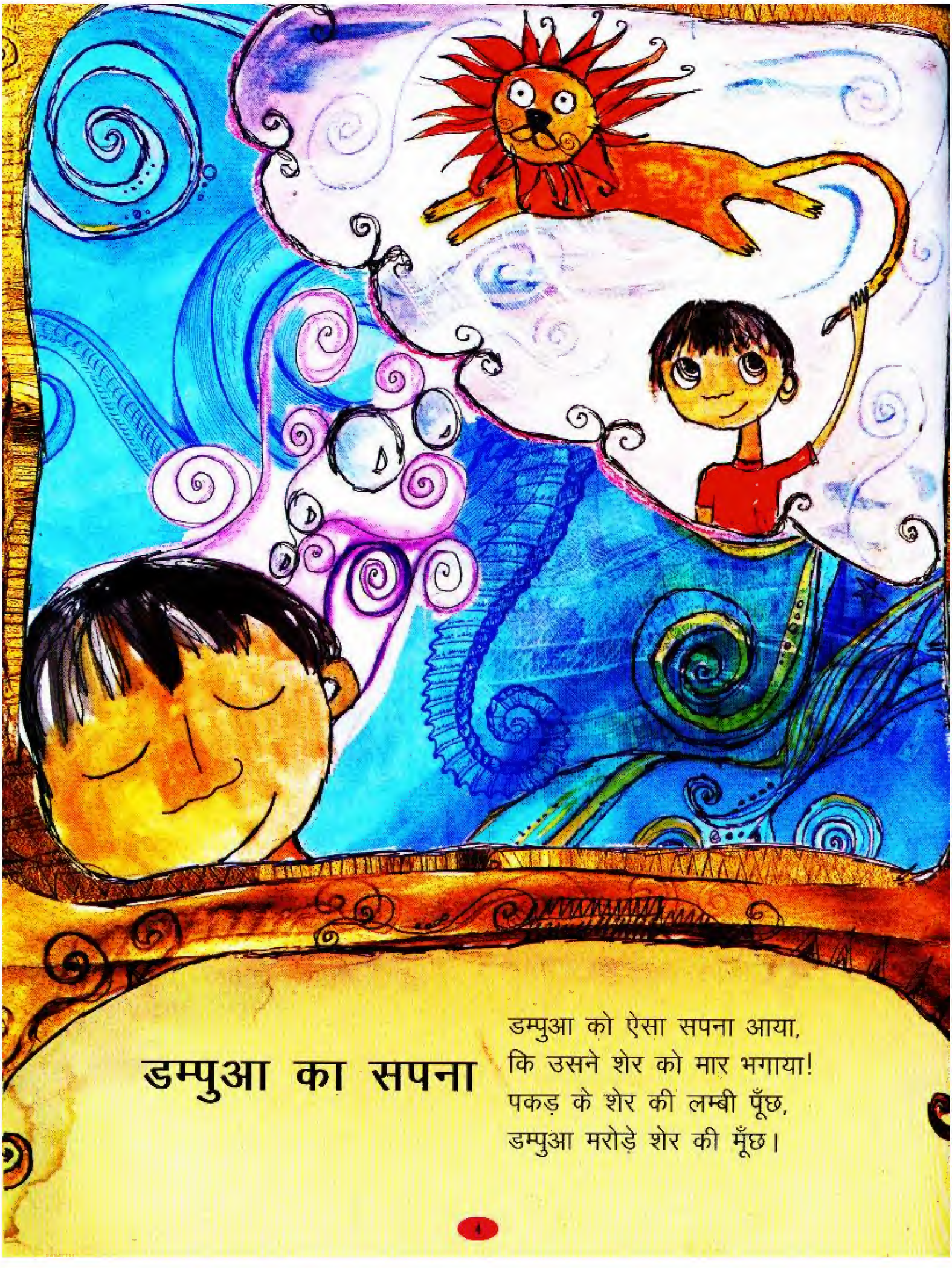

डम्पुआ का सपना

डम्पुआ को ऐसा सपना आया,
कि उसने शेर को मार भगाया!
पकड़ के शेर की लम्बी पूँछ,
डम्पुआ मरोड़े शेर की मूँछ।

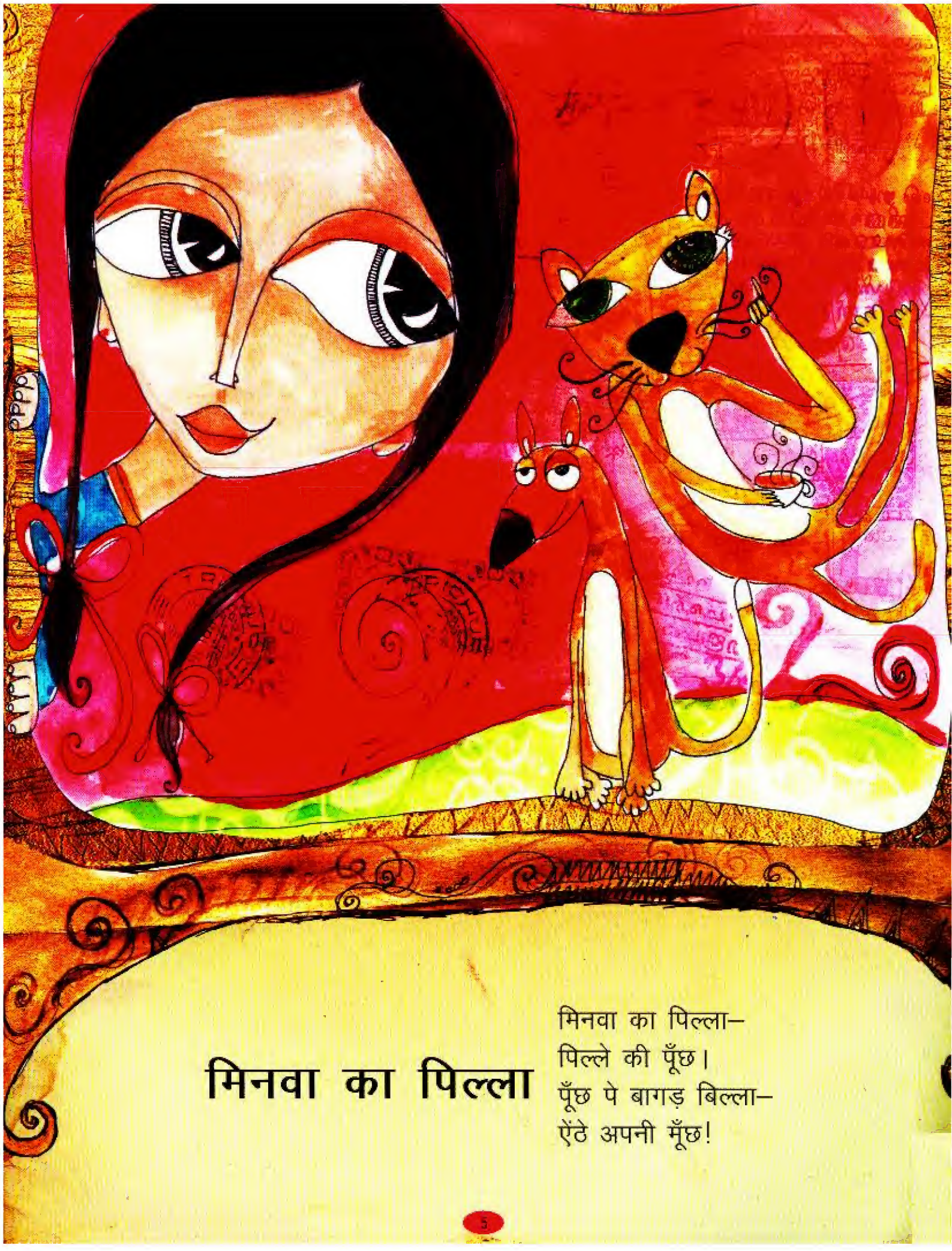

मिनवा का पिल्ला

मिनवा का पिल्ला–
पिल्ले की पूँछ।
पूँछ पे बागड़ बिल्ला–
ऐंठे अपनी मूँछ!

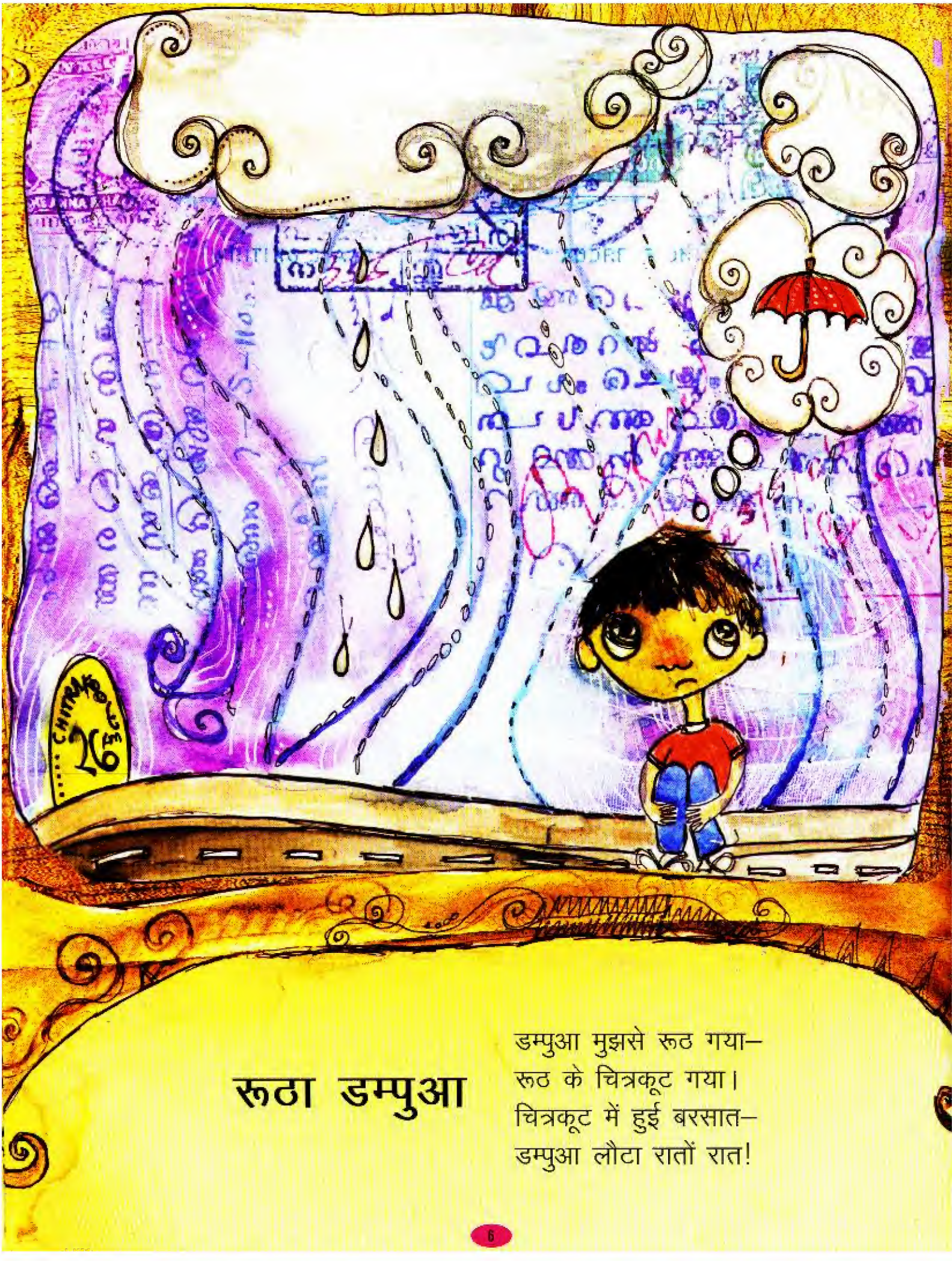

रूठा डम्पुआ

डम्पुआ मुझसे रूठ गया–
रूठ के चित्रकूट गया।
चित्रकूट में हुई बरसात–
डम्पुआ लौटा रातों रात!

डर गई मिनवा

मिनवा ने जो खोली अलमारी,
सर पे गिर गई मकड़ी।
मिनवा बेचारी डर की मारी,
भागे सर को पकड़ी!

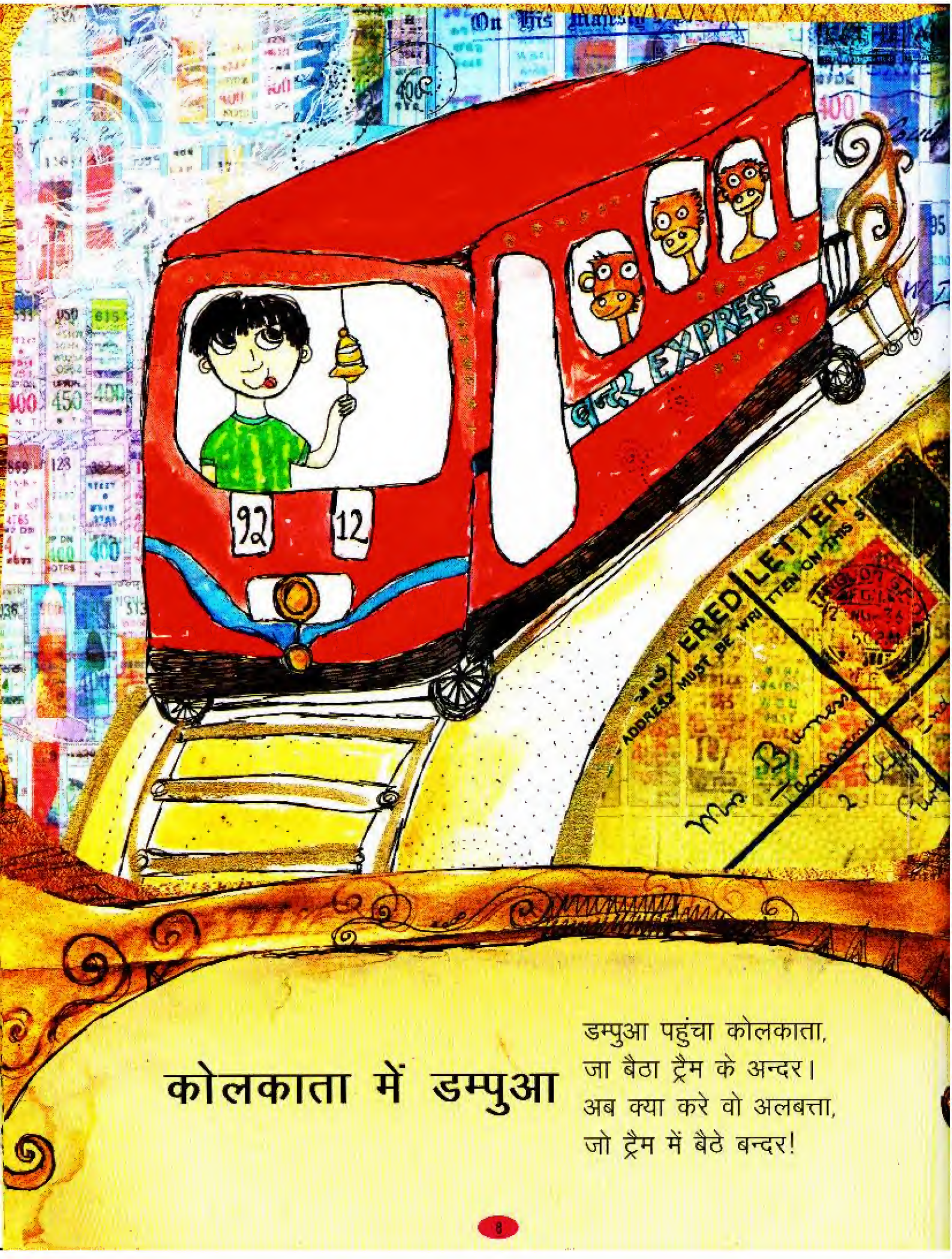

कोलकाता में डम्पुआ

डम्पुआ पहुंचा कोलकाता,
जा बैठा ट्रैम के अन्दर।
अब क्या करे वो अलबत्ता,
जो ट्रैम में बैठे बन्दर!

खेत में मिनवा

मिनवा गई खेत में,
तोड़ के लाये गन्ना।
साथ में लाये कच्चे आम,
और बनाये पन्ना!

खेलता डम्पुआ

ऐसा कोई खेल नहीं,
जो डम्पुआ न खेले।
जो न खेले खेल कोई,
घर बैठ के पापड़ बेले!

कैलेण्डर में मिनवा

मिनवा बन गई तस्वीर,
जा बैठी कैलेण्डर में।
Famous हो गई दिल्ली में,
जोधपुर में, जालंधर में!

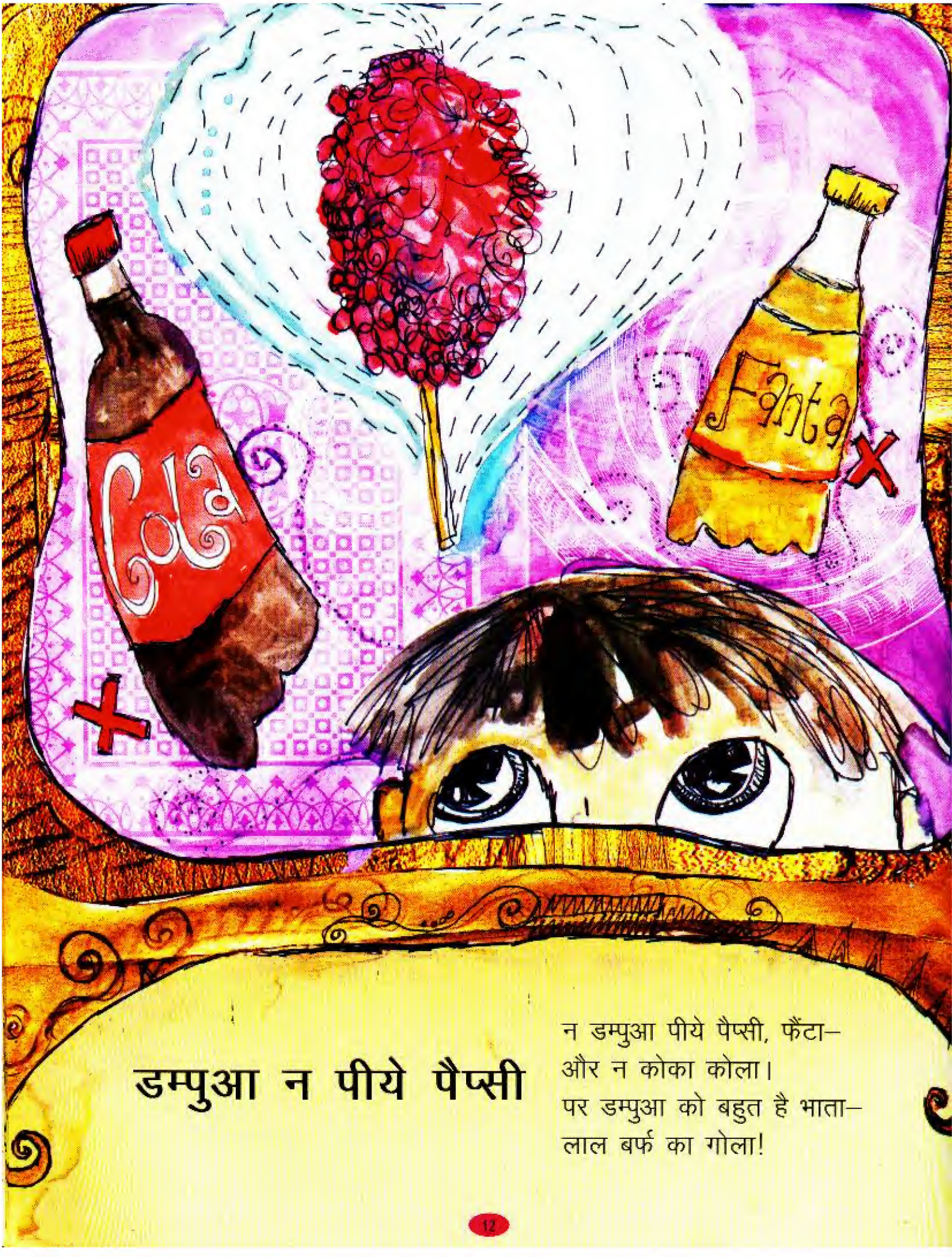

डम्पुआ न पीये पैप्सी

न डम्पुआ पीये पैप्सी, फैंटा–
और न कोका कोला।
पर डम्पुआ को बहुत है भाता–
लाल बर्फ का गोला!

छोटी मिनवा

मिनवा मेरी छोटी गुड़िया–
मानो मिठाई की हो पुड़िया–
गाये ऐसे जैसे चिड़िया–
मिनवा मेरी सबसे बढ़िया!

डम्पुआ के मित्र

सुपर मैन व स्पाइडर मैन
हैं डम्पुआ के दोस्त।
संग डम्पुआ के केक खायें
और साथ में टोस्ट!

डम्पुआ से अगर भिड़ने की
कोई करे जो हिम्मत।
सुपर मैन व स्पाइडर मैन
करें उसकी मरम्मत!

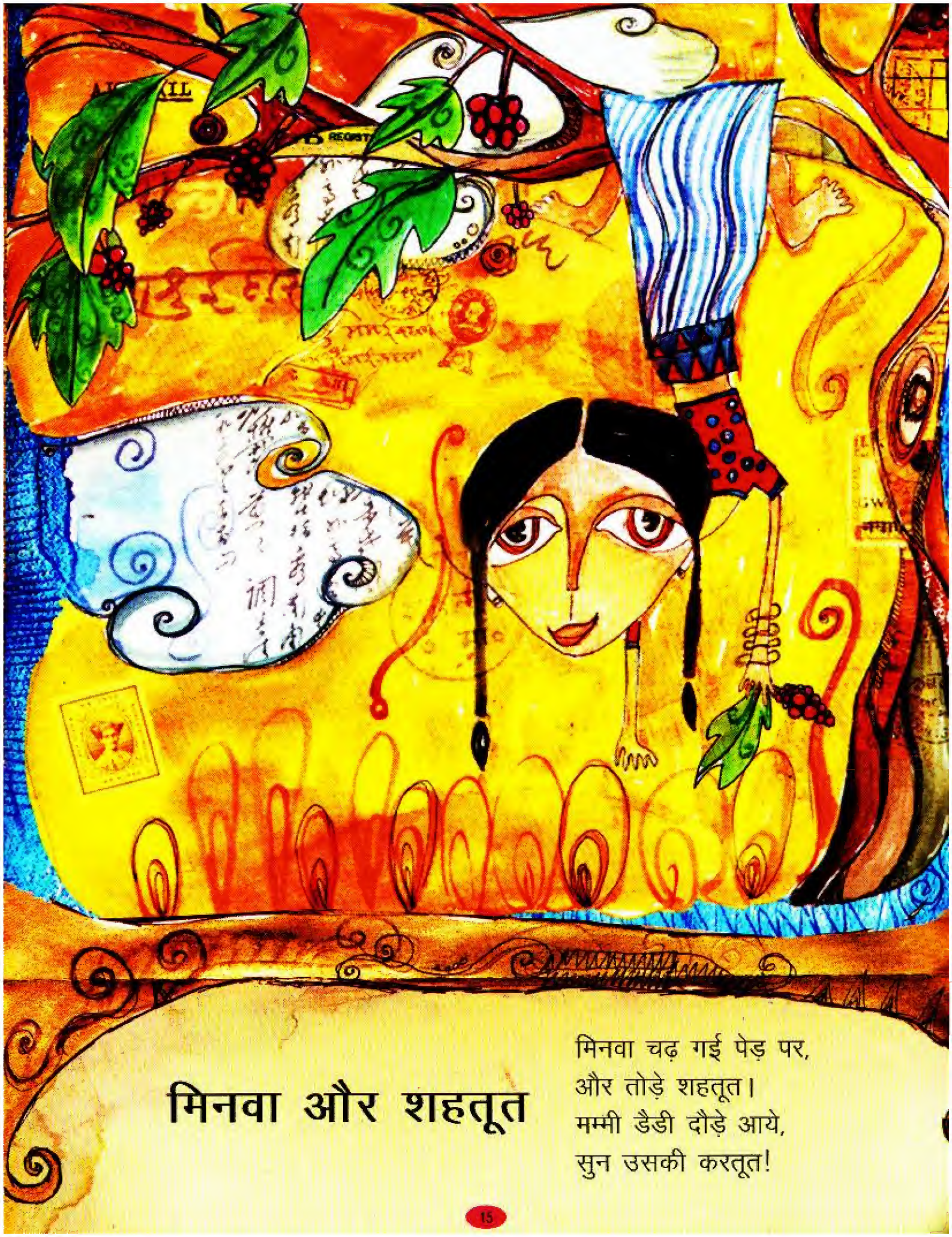

मिनवा और शहतूत

मिनवा चढ़ गई पेड़ पर,
और तोड़े शहतूत।
मम्मी डैडी दौड़े आये,
सुन उसकी करतूत!

डम्पुआ सीखे गिनती

डम्पुआ ने की एक विनती,
कि आये न उसको गिनती।
मम्मी ने दिलाया अॅबेकस–
अब डम्पुआ गिने एक से दस!

मिनवा खाये अचार

मिनवा चाट गई अचार,
लग गई उसको मिर्च हजार।
जब आँखों से आँसू आये,
मिनवा मुझसे आँख चुराये!

डम्पुआ का होमवर्क

डम्पुआ! डम्पुआ!!
हाँ बाबा!
होमवर्क मिला क्या?
न बाबा!
होमवर्क किया क्या?
हाँ बाबा!
नहीं मिला तो कैसे किया?
अरे बाबा! अरे बाबा!!

मिनवा का सपना

'बनूँ मैं क्या?' मिनवा सोच रही।
"यह सोच है उसको नोच रही।
किसान, वैज्ञानिक, उद्योगपति,
ड्राइवर, पायलट, या राष्ट्रपति?"

डम्पुआ का Blunder

डम्पुआ गया परीक्षा देने,
जब घड़ी में बज गए ढाई।
पड़ गये उसे लेने के देने,
बात जब यह याद आई।

कि exam तो था डेढ़ बजे का
अब तो बज गये ढाई!
करे तो अब वह करे भी क्या
जब धरी रह गई पढ़ाई!

मिनवा के दांत

मिनवा के दो दांत खो गये,
किसने दांत चुराये?
यह मामला सुलझाने को
चीन से अफसर आये!

अफसरों ने मुँह खुलवाया–
मिनवा बोली आ.....!
पर जो उसकी मुठ्ठी खुलवायी–
मिनवा बोली ना.....!

डम्पुआ और मकड़ी

डम्पुआ गया जो सब्जी मण्डी
खरीद के लाया ककड़ी।
मम्मी ने ककड़ी जो काटी,
अंदर से निकली मकड़ी!
मम्मी जो डर कर चिल्लाई,
डम्पुआ ने उठाई एक लकड़ी।
मकड़ी का निशाना बनाकर,
चलाई हाथ एक तगड़ी!

मकड़ी बेचारी डर की मारी
मां के पांव जा पकड़ी।
मम्मी ने छलांग जो मारी,
उनकी कमर जा अकड़ी!

तितली पर मिनवा

मिनवा सवार हो तितली पर
करे बाग की सैर।
तितली हवा में उड़ती जाये
मिनवा के हवा में पैर!

तितली उड़ चली ऊपर नीचे,
कभी दायें, कभी बायें।
मिनवा चिल्लाये आँखें मींचे,
सब बाजू हट जायें!

उड़ाये तितली धीमे या तेज़,
मिनवा ना तय कर पाये।
तितली पर तो कोई न ब्रेक,
अब क्या करे मिनवा, हाय!

डम्पुआ न पहने जूते

जब डम्पुआ ने गली से पतंग लूटा,
तो उसके सैंडल का स्ट्रैप टूटा।
अब डम्पुआ खेले नंगे पैर,
जूतों से सदा उसकी जो बैर।

यह बात पैरों को बहुत खली–
सोच सोच यह बात जली–
कि टांगें तो पहने निकर महंगे–
फिर पैर बेचारे क्यों रहें नंगे ?

लेखक के बारे में

रघुनाथन लगभग दो दशक तक आई आई एम, अहमदाबाद में फाइनेन्स के प्रोफेसर रहे। वे लगभग चार वर्षों तक आई एन जी वैश्य बैंक के अध्यक्ष भी रहे एवं वर्तमान में वे जी एम आर वारालक्ष्मी फांउडेशन के प्रमुख कार्यकारी के पद पर आसीन हैं।

पंजाब एवं जम्मू कश्मीर में जन्मे और पले–बढ़े रघु को अपनी मातृभाषा तमिल से ज्यादा हिन्दी और पंजाबी में प्रवीणता हासिल है। वे "गेम्स इण्डियनस् प्ले" (पेंग्विन 06) के लेखक होने के साथ–साथ कार्टूनिस्ट भी रह चुके हैं। वे कई दैनिक समाचार पत्रों में कॉलम भी लिखते हैं। उन्हें पुराने तालों के संग्रहण का शौक है।

इलस्ट्रेटर के बारे में

शैलो शिव सुलेमान आजकल बैगलोर के सृष्टि स्कूल ऑफ डिजाइन में पढ़ाई कर रही हैं। मिनवा और डम्पुआ के कारनामे उनकी बच्चों के लिए प्रकाशित चार पुस्तकों मे से एक हैं। बच्चों के लिए पुस्तकें चित्रित करने के अलावा वे भारत–भर में घूमी और अपनी यात्राओं के दौरान बच्चो के लिए चित्रित कहानियों का संग्रह भी तैयार किया। उनके द्वारा चित्रित चित्र उनकी बेबसाईट: www.bonifisheii.blogspot.com पर भी उपलब्ध है।

मिनवा और
डम्पुआ
के कारनामे
JUNIOR DIAMOND
CHILDREN'S BOOK 40
A H.W. Sameer Series
978-81-288-2388-2
X-30, Okhla Industrial Area Phase-II,
New Delhi-110020, INDIA
Tel.: 41611861, E-mail: sales@dpb.in
www.juniordiamond.com